१६. मैं उद्‌घोषक

(पाठ पर आधारित)

(१) 'सूत्र संचालक के कारण कार्यक्रम में चार चाँद लगते हैं', इसे स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : आज के जमाने में सूत्र संचालन का महत्त्व बहुत बढ़ गया है। कार्यक्रम छोटा हो या बड़ा, सूत्र संचालक अपनी प्रतिभा से उसमें चार चाँद लगा देता है। वह अपनी भाषा, आवाज में उतार - चढ़ाव, अपनी हाजिरजवाबी, श्रोताओं से चुटीले संवादों, संचालन के बीच-बीच में बरसात लाने के लिए चुटकुलों, रोचक घटनाओं के प्रयोग, मंच पर उपस्थित महानुभावों के प्रति अपने सम्मान सूचक शब्दों के प्रयोग, कार्यक्रमों के अनुसार भाषा-शैली में परिवर्तन करने तथा अपनी गलती पर माफी माँग लेने आदि गुणों के कारण सूत्र संचालन में तो चार चाँद लगा ही देता हैं, उपस्थित जन-समुदाय की प्रशंसा का पात्र भी बन जाता हैं। सूत्र संचालन अपने मिलनसार व्यक्तित्व, अपने विविध विषयों के ज्ञान, कार्यक्रम के सूत्रसंचालन, अपनी अध्ययनशीलता, अपनी प्रभावशाली और मधुर आवाज के संतुलित प्रयोग आदि के बल पर कार्यक्रम में जान डाल देता है। सधे हुए सूत्र संचालक की प्रतिभा का लाभ कार्यक्रमों और उनके आयोजकों को मिलता है।

इस तरह सधे हुए सूत्र संचालक के कारण कार्यक्रम में चार चाँद लग जाते हैं।

(२) उत्तम मंच संचालक बनने के लिए आवश्यक गुण विस्तार से लिखिए।

उत्तर : मंच संचालन एक कला है। अच्छा मंच संचालक कार्यक्रम में जान डाल देता है। मंच संचालक श्रोता और वक्ता को जोड़ने वाली कड़ी होता है। वही सभा की शुरूआत करता है। उत्तम मंच संचालक बनने के लिए संचालक को अच्छी तैयारी करनी पड़ती है। जिस तरह का कार्यक्रम हो, उसी तरह की तैयारी भी होनी चाहिए। उसी के अनुरूप कार्यक्रम की संहिता लेखन करनी चाहिए। मंच संचालक के लिए प्रोटोकॉल का ज्ञान, प्रभावशाली व्यक्तित्व, हँसमुख, हाजिरजवाबी तथा विविध विषयों का ज्ञान होना चाहिए। इसके अतिरिक्त भाषा पर उसका प्रभुत्व होना आवश्यक है। मंच संचालक को किसी कार्यक्रम में ऐन मौके पर परिवर्तन होने पर संहिता में परिवर्तन कर संचालन करते हुए कार्यक्रम को सफल बनाना पड़ता है। यह क्षमता उसमें होनी चाहिए। अच्छे मंच संचालक को हर प्रकार के साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है। मंच संचालन को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कार्यक्रम कोई भी हो, मंच की गरिमा बनी रहनी चाहिए। सबसे पहले मंच संचालन श्रोताओं के सामने आता है। इसलिए उसका परिधान, वेशभूषा आदि सहज और गरिमामय होनी चाहिए। मंच संचालन के अंदर आत्मविश्वास, सतर्कता, सहजता के साथ श्रोताओं का उत्साह बढ़ाने का गुण होना आवश्यक है। इसके अलावा मंच संचालक में समयानुकूल छोटे - छोटे चुटकुलों तथा रोचक घटनाओं से श्रोताओं को बाँधे रखने की शक्ति भी जरूरी है।

अच्छे मंच संचालक को भाषा का पर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक है। भाषा की शुद्धता, शब्दों का चयन, शब्दों का उचित प्रयोग तथा किसी प्रख्यात साहित्यकार के कथन का उल्लेख कार्यक्रम

को प्रभावशाली एवं हृदयस्पर्शी बना देता है। यही उत्तम मंच संचालन की थाती होती है। उत्तम मंच संचालक बनने वाले व्यक्ति को उपर्युक्त गुणों को आत्मसात करना आवश्यक है।

(३) सूत्र संचालन के विविध प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : आजकल संगीत संध्या तथा जन्मदिन की पार्टी का भी संचालन जरूरी गया है। सूत्र संचालक, मंच और श्रोताओं के बीच सेतु का कार्य करता है। कार्यक्रमों अथवा समारोहों में निखार लाने का कार्य सूत्र संचालक ही करता है। इसलिए सूत्र संचालक का बहुत महत्त्व होता है। सूत्र संचालन कई प्रकार के होते हैं। इसके मुख्यतः निम्न प्रकार होते हैं। शासकीय कार्यक्रम का सूत्र संचालन, दूरदर्शन हेतु सूत्र संचालन, रेडियो हेतु सूत्र संचालन, राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सूत्र संचालन। अलग अलग कार्यक्रमों का संचालन करने के लिए सूत्र संचालक को अलग-अलग प्रकार की सावधानियां बरतनी पड़ती हैं।
शासकीय एवं राजनीतिक समारोहों के सूत्र संचालन में प्रोटोकॉल का बहुत ध्यान रखना पड़ता है। इसके लिए पदों के अनुसार नामों की सूची बनानी पड़ती है। दूरदर्शन तथा रेडियो कार्यक्रमों का सूत्र संचालन करने के पहले उन पर प्रसारित किए जाने वाले कार्यक्रमों की संपूर्ण जानकारी प्राप्त करनी जरूरी है। कार्यक्रम की संहिता लिखकर तैयारी करनी होती हैं। सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के सूत्र संचालन का कार्य हल्के-फुल्के ढंग का होता है। इनके लिए अलग संहिता लेखन की तैयारी करनी पड़ती है।

(व्यावहारिक प्रयोग)

(१) अपने कनिष्ठ महाविद्यालय में मनाए जाने वाले 'हिंदी दिवस समारोह' का सूत्र संचालन कीजिए।

उत्तर : सूत्रसंचालन : दोस्तो! हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आज महात्मा गांधी स्मारक इंटर कॉलेज, नाशिक में आयोजित इस समारोह में आपका हार्दिक स्वागत है। इस अवसर पर मुझे अपनी भाषा हिंदी से संबंधित कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं -
जो थी तुलसी, चंद्र, सूर, भूषण को प्यारी।
थे रहीम, रसखान आदि जिस पर बलिहारी।
छवि ने जिसको लुभा लिया, जिसकी मनहारी।
सचमुच भाषा सकल राष्ट्र की वही हमारी।।
तो दोस्तो! हिंदी दिवस के इस अवसर पर अब बारहवीं कक्षा की छात्राओं द्वारा तैयार किया गया यह सुंदर नृत्य गीत प्रस्तुत है। आपके सामने यह नृत्य गीत प्रस्तुत कर रही हैं ऋचा, ऋधि, मधुरिमा, रोहा और अन्विता!
(कक्षाबारहवींकीलड़कियाँ -
जय माँ भारती जय, जय।
जय माँ भारती जय, जय।।
गीत गाते हुए नृत्य करती हैं।)
(तालियोंकीगड़गड़ाहटहोतीहै।)

सूत्र संचालन : दोस्तो! तालियों की गड़गड़ाहट ही बता रही है कि यह नृत्य-गीत आप सबको कैसा लगा।
दोस्तो! अब हम आरंभ कर रहे हैं आज का मुख्य समारोह, यानी हिंदी दिवस का रंगारंग कार्यक्रम। मंच पर उपस्थित हैं हमारे कालेज के प्रिंसिपल श्री राजेंद्र पेंडसे जी, आज के प्रमुख अतिथि स्थानीय राणा प्रताप कालेज के हिंदी विभाग के अध्यक्ष श्री लोकनाथ सिन्हाजी तथा कालेज के अन्य अध्यापकगण।

सूत्र संचालन : अब हम महात्मा गांधी स्मारक इंटर कॉलेज के हिंदी विभाग के प्रभारी श्री श्रीपत मिश्र जी से प्रार्थना करते है कि आप हमारे प्रमुख अतिथि श्री लोकनाथ सिन्हाजी को पुष्पगुच्छ देकर उनका स्वागत करें। श्री श्रीपत जी मिश्र...
(श्रीपतमिश्रप्रमुखअतिथिकापुष्पगुच्छदेकरस्वागतकरतेहै।तालियोंकीगड़गड़ाहटहोतीहै।)
दोस्तो! अब हम अपने महात्मा गांधी स्मारक इंटर कॉलेज के प्रिंसिपल श्री राजेंद्र पेंडसे जी की ओर से प्रमुख अतिथि श्री लोकनाथ सिन्हा जी से प्रार्थना करते हैं कि वे माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर उन्हें माल्यार्पण करें। श्रीमान लोकनाथ सिन्हा जी!

(लोकनाथसिन्हाजीमाँसरस्वतीकेसमक्षरखेदीपदानकेदीपप्रज्वलितकरतेहैं।वेसरस्वतीकीमूर्तिको मालापहनातेहैं।तालियोंकीगड़गड़ाहटहोतीहै।)

सूत्र संचालन : अब कालेज की ग्यारहवीं कक्षा की छात्राएँ सुनीता संघवी और जाह्नवी पांडेय देवी सरस्वती का वंदना गीत प्रस्तुत करेंगी...
(सुनीताऔरजाह्नवीमाँसरस्वतीकावंदनागीतगातीहैं)
या कुन्देन्दु तुषार हार धवला, या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा। या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वंदिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।
(सरस्वतीवंदनासमाप्तहोतीहै।)
(तालियोंकीगड़गड़ाहटहोतीहै।)

सूत्र संचालन : अब कालेज के प्रिंसिपल श्री राजेंद्र पेंडसे जी हमारे प्रमुख अतिथि श्री आलोक नाथ सिन्हा जी का परिचय देंगे और कालेज की विभिन्न गतिविधियों से आप लोगों को परिचित कराएंगे। श्री राजेंद्र पेंडसे जी...

(श्रीराजेंद्रपेंडसेप्रमुखअतिथिकोसमारोहकाअतिथिपदस्वीकारकरनेकेलिएबधाईदेतेहैंऔरसंक्षेपमें उनकापरिचयदेतेहैं।)
(वेकालेजकीगतिविधियोंकेबारेमेंबतातेहैं।)

सूत्र संचालक : अब मैं प्रिंसिपल साहब राजेंद्र पेंडसे जी की ओर से प्रमुख अतिथि आलोक नाथ सिन्हा जी से प्रार्थना करूंगा कि वे हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता, हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता तथा परीक्षाओं में प्रथम तथा द्वितीय स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को अपने कर कमलों से पुरस्कार प्रदान करने की कृपा करें।

सूत्र संचालक : हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार विजेता जनार्दन शर्मा मंच पर आ जाएँ।
(प्रमुख अतिथि के हाथों जनार्दन शर्मा पुरस्कार लेते हैं। तालियाँ बजती हैं।)

सूत्र संचालक : अब वाद-विवाद प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार पाने वाले जयंत साठे मंच पर आ जाएँ।
(जयंत साठे सूत्र पुरस्कार लेते हैं। तालियाँ बजती हैं।)

सूत्र संचालक : अब हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाने वाली स्नेहा पाण्डेय मंच पर आकर अपना पुरस्कार ग्रहण करें। स्नेहा पाण्डेय।

(स्नेहापाण्डेयप्रमुखअतिथिसेपुरस्कारग्रहणकरतीहै।तालियाँबजतीहैं।)

सूत्र संचालक : अब में परीक्षाओं में प्रथम तथा द्वितीय स्थान पाने वाले विद्यार्थियों से आग्रह करता हूँ कि वे मंच पर आकर अपने-अपने पुरस्कार ग्रहण करें। मैं पुरस्कार विजेताओं को उनके नाम से बुलाऊँगा। सभी विजेता बारी-बारी से मंच पर आकर अपना अपना पुरस्कार प्राप्त करें।

कक्षा नौवीं : प्रथम पुरस्कार - राकेश शिंदे।
द्वितीय पुरस्कार - स्मिता सिंह।

कक्षा दसवीं : प्रथम पुरस्कार - ओंकार शर्मा।
द्वितीय पुरस्कार - रोहिणी दवे।

कक्षा ग्यारहवीं : प्रथम पुरस्कार - जतिन सेवक।
द्वितीय पुरस्कार - सचिन मेहरा।

(विजेताछात्रबारी-बारीसेप्रमुखअतिथिसेअपने-अपनेपुरस्कारप्राप्तकरतेहैं।तालियाँबजतीहैं।)

सूत्र संचालन : अब कालेज के विज्ञान विभाग के प्रभारी श्री पवन राव 'हिंदी भाषा की विशेषता' के बारे में अपने विचार आपके सामने रखेंगे।

(पवनरावहिंदीभाषाकेबारेमेंअपनेविचारव्यक्तकरतेहैं।तालियाँबजतीहैं।)

सूत्र संचालन : अब हमारे कालेज के वाणिज्य विभाग के प्रभारी श्री अशोक शास्त्री जी हिंदी में संभावनाएँ' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। आप लोग ध्यान से सुनिए।
(श्रीअशोकशास्त्रीअपनेविचारव्यक्तकरतेहैं।तालियाँबजतीहैं।)

सूत्र संचालन : अब हमारे कालेज के हिंदी विभाग के प्रभारी श्रीपत मिश्र जी आपके समक्ष

हिंदी भाषा में रोजगार की संभावनाओं के बारे में आपको बताएँगे। श्री श्रीपत मिश्र जी।

(श्रीश्रीपतमिश्रअपनाभाषणसमाप्तकरतेहैं।तालियाँबजतीहैं।)

सूत्र संचालक : अब यहाँ उपस्थित सभी लोग उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहे होंगे कि हमारे प्रमुख अतिथि राणा प्रताप कालेज के हिंदी विभाग के अध्यक्ष श्री आलोक नाथ सिन्हा जी हिंदी भाषा के बारे में अपने विचारों से हमें अवगत कराएँ। अब वे आपके समक्ष हैं।

(श्रीलोकनाथसिन्हाअपनेविचारबतातेहैं।तालियाँबचतीहैं।)

सूत्रसंचालन : दोस्तो! आज हमारी हिंदी भाषा के बारे में आप लोगों को काफी उपयोगी जानकारियाँ प्राप्त हुईं। और अब समय आ गया है कार्यक्रम की समाप्ति का।
अब कालेज के वाइस प्रिंसिपल श्री रंगनाथ दाते जी आज के हमारे प्रमुख अतिथि, अध्यापकों, विद्यार्थियों तथा उपस्थित जन समुदाय के प्रति आभार व्यक्त करेंगे।

(वाइसप्रिंसिपलश्रीरंगनाथदातेजीआभारव्यक्तकरतेहैं।)
(अंतमेंदोपहर१२. ००बजेराष्ट्रगानकेसाथसमारोहसमाप्तहुआ।)

(२) शहर के प्रसिद्ध संगीत महोत्सव का मंच संचालन कीजिए।

उत्तर : मंच संचालन : भाइयो और बहनो! आज हमारे शहर कोल्हापुर में आयोजित प्रसिद्ध संगीत महोत्सव में आप सबका स्वागत है। और स्वागत है इस महत्त्वपूर्ण संगीत महोत्सव में अपने मधुर गीत-संगीत से श्रोताओं को सराबोर करने के लिए पधारे हुए संगीतकारों, गायक-गायिकाओं तथा उपस्थित जन-समुदाय का।

मंच संचालन : ...तो दोस्तो! प्रतीक्षा की घड़ियाँ समाप्त हुईं। अब आपके समक्ष मंच पर विराजमान हैं अपने साज-ओ-सामान के साथ शहर के प्रसिद्ध तबला वादक पंडित राधेश्याम जी। पंडित जी अपने तबला वादन के लिए पूरे जिले में विख्यात हैं। उनका साथ दे रही हैं शास्त्रीय गायिका शारदादेवी जी। पंडित जी के स्वागत में जोरदार तालियाँ...

(गायिकाशारदादेवीकेस्वरोंकेसाथपंडितराधेश्यामकीउँगलियाँतबलेपरथिरकनेलगतीहैं।लोगवाह-वाहकरतेहैं।तालियोंकीगड़गड़ाहटसेसभागारगूँजउठताहै।)

मंच संचालक : वाह भाई वाह! वाह वाह। पंडित जी ने वाकई अपनी वाद्य कला से श्रोताओं का मन मोह लिया। सभागार में गूंजती हुई तालियों का शोर इसका सबूत है।

मंच संचालन : दोस्तों! अब आप सुनेंगे अपनी चहेती लोकगीत गायिका राधा वर्मा को। वे आपको सावन माह की वर्षा की फुहारों के बीच गाए जाने वाले मधुर गीत कजरी के रस से सराबोर करेंगी। उनके साथ हारमोनियम पर हैं रामनाथ शर्मा जी और ढोलक पर हैं पंडित राधारमण त्रिपाठी जी।

(राधावर्माजीअपनेकजरीगीतसेसमांबाँधदेतीहैंऔरलोगतालियाँबजाकर 'वन्समोर... वन्समोर...' कहकरशोरमचातेहैं।)

मंच संचालक : दोस्तो! शांत रहिए... शांत! राधा जी आपके आग्रह का मान जरूर रखेंगी। राधा जी प्लीज! प्लीज!

(राधावर्मादूसरीबारकजरीगानाशुरूकरतीहैं।अबश्रोताभीउनकेस्वरसेस्वरमिलाकरगानाशुरूकर देतेहैं।)

मंच संचालक : वाह! वाह! दोस्तो, कजरी गीत है ही ऐसा। समूह में गाने पर इसका आनंद और ज्यादा, और ज्यादा बढ़ने लगता है। वाह भाई वाह!

मंच संचालक : अब मंच पर आपके समक्ष है प्रसिद्ध भजन गायक सुमित संत जी। संत जी की गायकी से तो आप सब परिचित ही हैं। अपने भजनों से संत जी आपको भक्ति रस से सराबोर कर देंगे। सुमित जी के साथ तबले पर हैं कामता प्रसाद जी। हारमोनियम पर हैं रामदास और सारंगी वादन कर रहे हैं प्रभु नारायण जी।

(सुमितसंतपायोजीमैंनेरामरतनधनपायो' तथा 'मेरेतोगिरधरगोपालदूसरोनकोई' जैसेभजनोंसे श्रोताओंकोभक्तिरससेसराबोरकरदेतेहैं।तालियोंऔरवाह! वाहकेस्वरगूँजतेहैं।)

मंच संचालक : वाह भाई! मेरे तो गिरधर गोपाल... (गुनगुनाते हैं) वाह! भक्ति रस का जवाब नहीं। आत्मा-परमात्मा का मिलन कराने वाला रस है भक्ति रस। वाह! वाह! वाह!

मंच संचालक : दोस्तो! अब आपको हम गजल गायकी की दुनिया में ले चलते हैं। मंच पर आपके सामने हैं प्रसिद्ध गजल गायक राजेंद्र शर्मा जी। गजल संभ्रांत श्रोताओं का गीत है। गजल के कई गायकों को अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है। श्री राजेंद्र शर्मा जी...

(राजेंद्रशर्माकीगायकीपरश्रोताझूमतेहैं।एक-एकशब्दपरदाददेतेहैं।वाह-वाहकेशब्दसुनाईदेतेहैं।राजेंद्रशर्माअपनागायनसमाप्तकरतेहैं।तालियोंकीगड़गड़ाहटहोतीहैं।)

मंच संचालन : दोस्तो! अब आप के समक्ष सितारवादक रमाशंकर जी तंत्रवाद्य सितार की मधुर ध्वनि से आपका मनोरंजन करने आ रहे है। सितारवादक रविशंकर का नाम तो आपने सुना ही होगा। अब सुनिए रमाशंकर जी को।

(सितारवादकरमाशंकरअपनेसितारपरमधुरध्वनिसेश्रोताओंकोमंत्रमुग्धकरदेतेहैं।तालियोंकीगडग डाहटहोतीहै।)

मंच संचालक : दोस्तो! मृदंग के मधुर स्वर से तो आप परिचित ही होंगे। मृदंग मंदिरों में बजाया जाने वाला वाद्य हैं। इसके अलावा गाँवों में देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना में मृदंग वाद्य का प्रयोग होता है। तो सुनिए अब मृदंग के मधुर स्वर पंडित कमलाकांत शर्मा जी से।

(पंडितकमलाकांतअपनेमृदंगपरऐसीथपकियाँदेतेहैंकिश्रोतावाह-वाहकरनेलगतेहैं।)

मंच संचालक : दोस्तो! अब हम एक ऐसे वाद्य और उसे बजाने वाले व्यक्ति से आपका परिचय कराते हैं, जो वाद्य पुराने जमाने में लड़ाई के समय सैनिकों में उत्साह पैदा करने के लिए बजाया जाता था। लेकिन आजकल इसका प्रयोग गाँवों में नौटंकियों में किया जाता है। इसका नाम है नगाड़ा। आज इसे मंच पर बजा हैं पंडित श्याम नारायण जी। श्याम नारायण जी का पेशा ही है नौटंकियों में नगाड़ा बजाना। तो श्याम नारायण जी... कड़कड़... कड़कड़... धम्म!

(श्यामनारायणजीनौटंकीकीतर्जपरनगाड़ाबजातेहैं।श्रोतामस्तीसेसिरहिलातेहैं।कुछदर्शकअपने स्थानपरखड़ेहोकरनगाड़ेकीतर्जपरअभिनयभीकरनेलगतेहैं।श्यामनारायणजीनगाड़ावादनबंदक रतेहैं।तालियोंकीगड़गड़ाहटहोतीहैं।)

मंच संचालन : दोस्तो! अब मैं आपके सामने आपका परिचय वाद्य यानी बाँसुरी बजाने वाले कलाकार को मंच पर अपने बाँसुरी वादन से आपका मनोरंजन करने के लिए बुलाता हूँ। दोस्तो! बाँसुरी की धून बहुत कर्णप्रिय होती है। भगवान श्री कृष्ण की बाँसुरी सुनकर गायें तक उनके पास दौड़ी चली आती थीं। तो शीतल यादव जी मंच पर अपनी बाँसुरी के साथ आपके सामने हैं।

(शीतलयादवबाँसुरीबजातेहैं।उनकीबांसुरीकीधुनसेपंडालगूंजनेलगताहै।तालियाँबजतीहैं।)

मंच संचालक : दोस्तो! संगीत महोत्सव का कार्यक्रम हो और उसमें फिल्मी गीत-संगीत का समावेश न हो, ऐसा कैसे हो सकता है। दोस्तो! हम आज आपको फिल्मी गीतों के करावके संगीत की महफिल में ले चलते हैं। तो फिर देर किस बात की।...

(मंचपरकरावकेसंगीतबजताहै।इसमेंसन१९६० सेलेकरसन१९८० तककेमधुरगीतोंकेमुखड़ोंसंगीत बजतेहैंऔरगायकमधुरस्वरमेंइनगीतोंकोगातेहैं।)

मंच संचालक : दोस्तो! आपको पॉप संगीत का मजा दिलाए बिना भला हम कैसे जाने देंगे। ऐसी कल्पना भी मत कीजिए। तो हो जाए धम... धमा... धम...।

(मंचपरदिलदहलादेनेवालापॉपसंगीतबजताहै।लोगइससंगीतकेसाथनाचनेलगतेहैं।)

मंच संचालक : अरे भाई, हम तो भूल ही गए। हमारे बीच एक बहुत ही उदीयमान कलाकार कब से अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। ये हैं बैंजो वादक मास्टर देवेश पांडेय जी। तो पांडेय जी, शुरू हो जाइए।

(देवांशपांडेजीअपनेबैंजोवादकसेश्रोताओंकोमंत्रमुग्धकरदेतेहैं।चारोंओरसेवाह-वाहकाशोरहोताहैं।)

मंच संचालक : अरे भाई, हमें पता है कि आप हमारे चहेते कलाकार पुत्तूचेरी पिल्लई को सुने बिना नहीं जाने वाले हैं। भाइयो! आखिर में आपके सामने श्रीमान पिल्लई साहब ही आ रहे हैं। आप तो जानते ही हैं कि वे -

प्यारा भारत देश हमारा।
हमको प्राणों से है प्यारा।
गीत हिंदी, मराठी, गुजराती, तमिल और तेलुगु भाषाओं में सुनाते हैं। आप यह देशभक्तिपूर्ण मधुर गीत सुनिए।

(श्रीपिल्लईपाँचभाषाओंमेंयहगीतगातेहैं।तालियाँबजतीहै।)
(गीतसमाप्तहोताहै।)

मंच संचालक : दोस्तो। इस गीत के साथ ही हमारा आज का संगीत महोत्सव का यह समारोह समाप्त होता है।
।। जय हिंद ।।
(राष्ट्रगानबजताहै, परदागिरताहै।)